आज़ादी की कहानी

तबाही का दौर था,
"भारत लूटो-भारत लूटो"
हर तरफ यही शोर था,
सबको यही लगा हिंदुस्तान कमज़ोर था..

खून की होली खेल रहे थे,
हस-हस कर तमाशा देख रहे थे,
जगह-जगह ज़ालिमों का ज़ोर था,...
सबको यही लगा हिंदुस्तान कमज़ोर था..

बर्दाश की हद पार हो गयी थी,
आवाम शहीद होने को तैयार हो गयी थी,
मरने-मारने का न अब कोई गम था,
सबको दिखाना था हिंदुस्तान में कितना दम था..

बोस खून के बदले आज़ादी दिला रहे थे,
बिस्मिल दिलों में सरफ़रोशी की आग जगा रहे थे,
भगत सिंह अंग्रेज़ो की ईंट से ईंट बजा रहे थे,
सब मिलकर एक आज़ाद भारत का सपना सजा रहे थे

सुखदेव राजगुरु की फांसी पड़ी अंग्रेज़ो पर भरी,
गाँधी जी की लाठी ने हिला दी अंग्रेज़ी हुकूमत की चार-दीवारी,
आये थे लूटने सोने की चिड़ियाँ को,
और जा रहे थे खाली हाथ भिखारी..

जाते-जाते भी गन्दा खेल खेल गए,
भारत को मज़हब के जाल में लप्पेट गए,
तो ऐसी थी भारत की आज़दी की कहानी,
कुछ हिदुस्तानी और कुछ पाकिस्तानी..